# हक है हमारा! पहचान चाहिए!

## मजदूर हैं मजबूर नहीं! मेहनत है पहचान नहीं!

### आज के हालात

आज आजादी के 65 वर्ष बाद भी देश की राजधानी दिल्ली का एक बहुत बड़ा हिस्सा बेरोजगारी, भुखमरी, बिना पहचान के फुटपाथ/झुग्गी बस्ती में नारकीय जिंदगी जीने को मजबूर है। समाज की मुख्यधारा से अपने आप को अलग महसूस करने वाला यह समुदाय हमेशा हाशिए पर रहा है। इस समुदाय ने अपनी पहचान, सम्मान व अधिकार प्राप्त करने के लिए एकजुट होकर संघर्ष करने का प्रयास शुरू किया है। ग्रामीण क्षेत्रों से अपनी और अपने परिवार की जरूरतों को पूरा करने के उद्देश्य से रोजगार की तलाश में लोगों का गांव से शहर आना सदियों से चला आ रहा है। परंतु शहरी सरकारी व्यवस्था के लचर होने के कारण लोगों को पर्याप्त अवसर नहीं मिल पाता और जिसके कारण ये लोग धीरे–धीरे समस्याओं की गिरप्त में आ जाते हैं। समस्याएं ऐसी हैं जिनमें फंसने के बाद फिर निकलने का रास्ता नहीं मिल पाता।

### मत देने का अधिकार संवैधानिक अधिकार

जिन समस्याओं की हम बात कर रहे हैं उनमें पहचान का न होना सबसे बड़ी समस्या है। इसके कारण किसी तरह की सुविधाओं को नहीं प्राप्त कर सकते, मकान किराये पर नहीं मिलता जिसके कारण फुटपाथ पर रहना पड़ता है। कहीं नौकरी नहीं मिलती क्योंकि कोई पहचान नहीं होती, बैंक में खाता नहीं खुल पाता जिससे पैसा नहीं बचा पाते, पुलिस परेशान करती है, देर रात कहीं काम पर से वापस आ रहे हों तो पुलिस पहचान–पत्र मांगती है। सेवा कुटीर पकड़कर भिक्षुगृह में डाल देती है। इस तरह की समस्याएं जिनके समाधान की जिम्मेदारी पूरी तरह से सरकार की है। इस तरह की समस्याओं से मानवता भी शर्मसार होती है। यह मानव अधिकार का हनन है। बीमार होने पर इलाज नहीं करा पाते, बुजुर्ग एवं विकलांगों के लिए खाने, पहनने, दवा, महिलाओं को गर्भावस्था के समय किसी तरह की मदद नहीं मिलती आदि कुछ प्रमुख समस्याएं हैं।

### मंच का अभियान

शहरी अधिकार मंच दिल्ली में बेघर नागरिकों के पहचान एवं मताधिकार के लिए पिछले कई वर्षों से संघर्ष कर रहा है, परन्तु सरकार की संवेदनहीनता के कारण अभी तक यह एक समस्या बनी हुई है, लेकिन कब तक? अब समय आ गया है कि हम सब एकजुट होकर पहचान हासिल करें। शहरी अधिकार मंच के प्रयास से फॉर्म–6 पर लिखित में आया है कि सभी बेघर नागरिकों को सरकार द्वारा पहचान दी जाये जिससे उन्हें भी मत देने के अधिकार के साथ–साथ नागरिक सुविधाएं हासिल हो सकें।

### आपका जुड़ाव अभियान की ताकत

यह वर्ग अपने श्रम से समाज के मध्यम वर्ग को अच्छा–खासा लाभ पहुंचाता है। सुबह उठने से लेकर रात सोने तक यह वर्ग समाज के मध्यम वर्ग को बेहतर सेवा देने में लगा रहता है। अखबार पहुंचाने वाला, दूध पहुंचाने वाला, सब्जी पहुंचाने वाला, गाड़ी की सफाई करने वाला, गाड़ी चलाने वाला, कपड़े की धुलाई करने वाला, कपड़े प्रेस करने वाला, घर के अन्दर सफाई करने वाला –कोई और नहीं बल्कि मजदूर ही होते हैं। परन्तु इसके बदले इस समुदाय को क्या मिलता है –यह एक सवाल है। इसी सवाल को लेकर 'शहरी अधिकार मंच' मताधिकार का अभियान चला रहा है। आपके जुड़ाव से आपका अभियान मजबूत होगा।

**सभी बेघर साथी अपने नजदीकी मतदाता पहचान–पत्र केन्द्र पर जाकर अपना फॉर्म जमा कराएं।**

**नोट:** किसी तरह की जानकारी एवं सहयोग लिए आप नीचे दिए गए नम्बरों पर संपर्क कर सकते हैं।

**अशोक: 9716436605, आजाद: 9811914329, ईश्वर: 9818801823,**
**नसीर: 9810748509, सतवीर: 8510971086, आसिफ: 9213861042**

Shahri Adhikar Manch: Begharon Ke Saath
शहरी अधिकार मंच: बेघरों के साथ
Urban Rights Forum: With the Homeless

HelpAge India | Fighting isolation, poverty, neglect

Printed by: Kalpana Printographics 9910406059